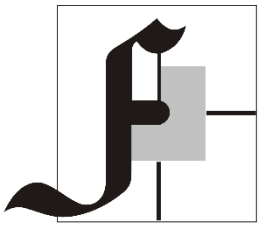

Front desk
Jainism Forum

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from an online repository and is presented here as part of the **Front Desk Jainism Forum (FDJF)** collection. It is shared under commonly accepted Fair Use guidelines, intended for individual educational or research purposes.

To the best of our knowledge, this book resides in the public domain, and we believe the original repository intended for its public dissemination. We wholeheartedly applaud and support their efforts, and our intent in providing this version is solely to make the book accessible to a broader audience. The **FDJF** group values the importance of cataloging in making valuable works discoverable and strives to support these efforts through our initiatives.

In some cases, original sources may no longer be accessible, are difficult to locate, or are provided in Indian languages instead of English, limiting their reach. The **FDJF** aims to address these challenges by expanding access while supporting repositories and digitization projects. Our intent is to complement—not undermine—these efforts.

For more information about our mission and fair use guidelines, please visit our website. While we make these works available with the understanding that they are in the public domain within our jurisdiction, we advise users to confirm their legal rights to access and use this material in their own jurisdiction before downloading.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection and have concerns about its presentation or availability, please email us. We are committed to addressing any objections promptly and respectfully. This notice serves both to inform readers and to clarify our intent and responsibility regarding these works.

The FDJF team

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

फेयर यूज़ घोषणा

यह पुस्तक एक ऑनलाइन भंडार (repository) से प्राप्त की गई है और यहाँ *फ्रंट डेस्क जैनिज़्म फोरम (FDJF)* संग्रह के अंतर्गत प्रस्तुत की जा रही है। इसे सामान्यतः स्वीकृत *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के अनुसार साझा किया गया है, जिसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत शैक्षिक एवं शोध उपयोग है।

हमारी जानकारी के अनुसार, यह पुस्तक सार्वजनिक डोमेन में है और हमें विश्वास है कि मूल भंडार का उद्देश्य इसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराना था। हम उनके प्रयासों की सराहना और समर्थन करते हैं। इस संस्करण को उपलब्ध कराने का हमारा एकमात्र उद्देश्य पुस्तक को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाना है। FDJF समूह मूल्यवान कृतियों को खोजने योग्य बनाने में सूचीकरण (cataloging) के महत्व को समझता है और अपनी पहलों के माध्यम से इन प्रयासों का समर्थन करता है।

कुछ मामलों में, मूल स्रोत अब उपलब्ध नहीं होते, उन्हें ढूँढना कठिन होता है, या वे भारतीय भाषाओं में होते हैं, जिसके कारण उनकी पहुँच सीमित रह जाती है। FDJF का उद्देश्य इन चुनौतियों का समाधान करते हुए पहुँच का विस्तार करना है, साथ ही भंडारों और डिजिटलीकरण परियोजनाओं का समर्थन करना है। हमारा उद्देश्य इन प्रयासों को कमजोर करना नहीं, बल्कि उनका पूरक बनना है।

हमारे उद्देश्य और *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट देखें। यद्यपि हम इन कृतियों को इस समझ के साथ उपलब्ध कराते हैं कि वे हमारे अधिकार क्षेत्र में सार्वजनिक डोमेन में हैं, फिर भी हम उपयोगकर्ताओं को सलाह देते हैं कि डाउनलोड करने से पहले अपने अधिकार क्षेत्र में इस सामग्री तक पहुँच और उपयोग से संबंधित अपने कानूनी अधिकारों की स्वयं पुष्टि करें।

यदि आप इस या हमारे संग्रह की किसी अन्य पुस्तक के बौद्धिक संपदा स्वामी हैं और इसकी प्रस्तुति या उपलब्धता को लेकर कोई आपत्ति या चिंता है, तो कृपया हमें ईमेल करें। हम सभी आपत्तियों का त्वरित और सम्मानपूर्वक समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सूचना पाठकों को अवगत कराने के साथ-साथ इन कृतियों के संबंध में हमारे उद्देश्य और जिम्मेदारी को स्पष्ट करने के लिए दी गई है।

FDJF टीम

卐 श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः 卐

M_ËHmaH
lr MÝÐà^ nyOZ {dYmZ

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ पूजन विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - पञ्चम - 2010 प्रतियाँ -2000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 21/- रु.

- अर्थ सौजन्य :-

श्री 1008 श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर
नहटौर, बिजनौर (उ.प्र.)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

श्री चन्दप्रभ पूजन विधान

कृति – **चमत्कारक श्री चन्दप्रभ पूजन विधान**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – पञ्चम – 2010 प्रतियाँ –2000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141–2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला–सागर (म.प्र.)
फोन : 07581–274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु – 21/– रु.

– अर्थ सौजन्य :–

श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर
सकल जैन समाज शिवाड़, जिला–टोंक (राज.)

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

प्राक्कथन

बाबा चन्द्रप्रभु की भक्ति में भाव-विभोर होने को पूजन, विधान के लिए निमित्त बने पं. कमलकुमारजी 'कमलांकुर' भोपाल जब वह 2006 में पर्युषण पर्व पर भी श्री दिगम्बर जैन मंदिर अहिंसा स्थल अलवर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं दशधर्म पर्व पर प्रवचन करने आये तभी उन्होंने मेरी श्री 1008 विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान पूजन कराई और उस पूजन विधान में वे भक्ति की गंगा में सराबोर हुए कि वे निवेदन किए बिना न रह सके और उन्होंने उसी समय कहा गुरुदेव आपने इस पूजन में इतनी सुन्दर और सरल शब्दों को लिया जिससे कि सभी भव्य जीव इसे आसानी से भावसहित ग्रहण कर पार्श्वनाथ बाबा की भक्ति में विभोर हो असीम पुण्य संचित करते हैं।

हे गुरुदेव ! यदि इतने ही सुसौम्य शब्दों में आप श्री 1008 चन्द्रप्रभु विधान का लेखन करें तो हम भव्यों के लिए अति उत्तम होगा; क्योंकि अलवर जिले में ही 1008 बाबा श्री चन्द्रप्रभु तीर्थक्षेत्र तिजाराजी है। जहाँ हमेशा भक्त लोग आकर बाबा चन्द्रप्रभ की भक्ति से अपने कष्टों को दूर करना चाहते हैं। समय न होते हुए भी पण्डितजी के निवेदन को स्वीकार कर विधान लिखना प्रारम्भ किया और पर्युषण के व्यस्त कार्यक्रम के बीच ही लगभग विधान पूर्णतः की ओर पहुँच गया, पश्चात् संघस्थ ब्र. बहिनों ने उसे स्वच्छ लेखन कर प्रकाशन हेतु तैयार किया तभी पण्डितजी श्री संभवनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शिवाजी पार्क, अलवर में श्री 1008 समोशरण महामण्डल पूजन विधान कराने आए उस समय प्रथम बार विधान का प्रकाशन किया गया था। उसके बाद पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा झोटवाड़ा एवं पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा बैनाड़ में तथा दीक्षा समारोह अजमेर में 2-2 हजार प्रतियों का प्रकाशन किया। पुनः उक्त प्रकाशकों के द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। सभी आशीर्वाद के पात्र हैं।

ह्रह्न आचार्य विशदसागर

प्रणामाञ्जलि

''जिनपूजा ते सब सुख होय, जिनपूजा बिन और न कोय।
जिनपूजा ते स्वर्ग विमान, अनुक्रम ते पावे निर्वाण।।''

प्रथम बार **परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागरजी महाराज** के दर्शन किए तथा परम पूज्य आचार्यश्री के द्वारा रचित श्री 1008 विघ्नहरण पार्श्वनाथ पूजन विधान कराने का अवसर प्राप्त हुआ। । तब मैंने पूज्य गुरुदेव से निवेदन कर दिया, गुरुदेव ! आप चन्द्रप्रभु भगवान की भक्ति में भाव-विभोर होने के लिए इसी प्रकार के कुछ सरल और सुन्दर शब्दों का संग्रह कर विधान तैयार कर देवें। कुछ ही दिनों में अपनी कठोर साधना में रत होते हुए भी आचार्यश्री ने हम भक्तों को अवगाहन करने हेतु यह **'श्री चन्द्रप्रभु पूजन विधान'** तैयार कर दिया, यह चन्द्रप्रभु पूजन विधान ही नहीं है बन्धुह्न

''यह पूजा नहीं गुणगान नहीं, यह तो अमृत का प्याला है।
जो भाव सहित इसको पीता, वह अर्हत् होने वाला है।।''

आज के इस भौतिकवादी युग में इंसान अपने जीवन में अभाव और तनावग्रस्त रहता है। जिससे अनेक प्रकार से अशांत और दुःखी होकर तन, मन की क्षति करता रहता है। अशांति से बचने का एकमात्र साधन है- जिनेन्द्र भक्ति, पूजा, अर्चना। इन्सान अज्ञानतावश तनाव और अभाव से बचने हेतु कई बार मिथ्या मान्यताओं में फँसकर अपने धर्म और जीवन की क्षति करता रहता है। उससे बचकर सम्यक् भक्ति और धर्म के द्वारा अपने मानसिक तनाव एवं जीवन में होने वाले अभाव की पूर्ति के लिए पुण्य का संचय कर राहत प्राप्त कर सकता है। इसके लिए **क्षमामूर्ति परम पूज्य आचार्यश्री 108 विशदसागरजी महाराज** ने हमें यह आधार प्रदान किया अतः हम तथा सभी भक्त जीवनपर्यन्त आभारी रहेंगे।

गुरुदेव ने हमें चमत्कारी विघ्न विनाशक श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की भक्ति करने का इतना सरल और सुन्दर सहारा हमें शब्द संचय के माध्यम से प्रदान किया है, उनकी इस कृपा के हम सदा पात्र बने रहें, इसी भावना के साथ ऐसे स्व-परोपकारी गुरुदेव के चरणों में शत्-कोटि नमन करता हूँ।

मुझे प्रभु के चरणों में भक्ति जगा लेने दे, प्रभु भक्ति की गंगा में डुबकी लगा लेने दे।
ऐ मौत ! तू मुझे खुशी से ले जाना कोई बात नहीं, इसके पहले बाबा चन्द्रप्रभु के गीत गा लेने दे।।

-पंडित कमल कुमार जैन 'कमलांकुर'
I-863, कोटरा, भोपाल (एम.पी.), मो. 9425010167, 0755-2771767

चन्दनषष्ठी व्रत कथा

देव नमो अरहन्त नित, वीतराग विज्ञान।
चन्दनषष्ठी व्रत कथा, कहूँ स्वपर हित जान।।

काशी देश में बनारस नाम का प्रसिद्ध नगर है। जिसको तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान ने अपने जन्म धारण करने से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम **पद्मिनी** था। एक दिन वह राजसभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छह ऋतुओं के फल-फूल राजा को भेंट किये। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजन सहित वंदना को गया और भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा दे नमस्कार करके बैठ गया।

श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म का वर्णन करके पश्चात् श्रावक धर्म का वर्णन किया। उसमें भी सर्वप्रथम सब धर्मों का मूल सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया कि वस्तुस्वरूप का यथार्थ श्रद्धान हुए बिना सब ज्ञान व चारित्र निष्फल है और वह वस्तुस्वरूप श्रद्धान सत्यार्थ देव (अर्हन्त) सत्यार्थ गुरु (निर्ग्रन्थ) और दयामयी (जिन प्रणीत) धर्म से ही होता है। अतएव प्रथम ही इनका परीक्षापूर्वक श्रद्धान होना आवश्यक है। तत्पश्चात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह त्याग से पाँच व्रत एकदेश पालन करें तथा इन्हीं के यथोचित पालनार्थ सप्तशीलों (तीन गुणव्रत व चार शिक्षाव्रतों) का भी पालन करें इत्यादि उपदेश दिया, तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा- हे प्रभु ! रानी के प्रति मेरा अधिक स्नेह होने का क्या कारण हैं ? यह सुनकर श्री गुरुदेव ने कहाॱॱ

राजा ! सुनो, अवन्ति देश में एक उज्जैन नाम का नगर है। वहाँ वीरसेन नाम का राजा और रानी वीरमती थी। इसी नगर में जिनदत्त नामक सेठ थे। उसकी जयावती सेठानी से ईश्वरचन्द्र नाम का पुत्र भी था, जो कि अपने मामा की पुत्री चंदना से पाणिग्रहण कर सुख से काल व्यतीत करता था। एक समय सेठ जिनदत्त और सेठानी जयावती कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहण कर मुनि-आर्यिका हो गये और तप के माहात्म्य से अपनी-अपनी आयु पूर्णकर स्वर्ग में देव-देवी हुए और पिता का पद प्राप्त करके ईश्वरचन्द्र सेठ भी चंदना सहित सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा के

निमित्त आये सो ईश्वरचन्द्र ने भक्ति सहित मुनि को पड़गाह कर अपनी स्त्री से कहा कि श्री गुरुजी को आहार दो। तब चंदना बोलीॱॱ स्वामी ! मैं ऋतुवती हूँ, कैसे आहार दूँ ? ईश्वरचन्द्र ने कहा कि चुपचाप रहो, हल्ला मत करो, गुरुजी मासोपवासी हैं इसलिये शीघ्र पारणा कराओ। चंदना ने पति के वचनानुसार मुनिराज को आहार दे दिया, श्री मुनिराज तो आहार करके वन में चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात् इस गुप्त पाप का उदय होने से पति-पत्नी दोनों के शरीर में गलित कुष्ठ हो गया, अत्यन्त दुःखी हुए और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से श्रीभद्र मुनिराज संघ सहित उद्यान में पधारे। नगर के लोग वन्दना को गये और ईश्वरचन्द्र भी अपनी भार्या सहित वन्दना को गया। भक्तिपूर्वक नमस्कार कर बैठा और धर्मोपदेश सुना पश्चात् पूछने लगा- हे दीनदयाल ! हमारे यहाँ कौन से पाप उदय आया है कि जिससे यह व्यथा उत्पन्न हुई है। तब मुनिराज ने कहा- तुमने गुप्त कपट कर पात्रदान के लोभ से अतिमुक्तक स्वामी को ऋतुवती होने की अवस्था में भी आहारपान व मन-वचन-काय शुद्ध है कहकर आहार दिया है अर्थात् अपवित्रता को भी पवित्र कहकर चारित्र का अपमान किया है सो इसी पाप के कारण से यह असातावेदनीय कर्म उदय में आया है। यह सुनकर उक्त दम्पत्ति सेठ-सेठानी ने अपने अज्ञान कृत्य पर बहुत पश्चात्ताप किया और पूछाॱॱ

प्रभु ! अब कोई उपाय इस पाप से मुक्त होने का बताइये तब श्री गुरु ने कहाॱॱ हे भद्र ! सुनो भादों बदी षष्ठी को चारों प्रकार के आहार त्याग करके उपवास धारण करो तथा जिनालय में जाकर अभिषेक पूजन करो अर्थात् अष्टद्रव्य से छह अष्टक चढ़ाओ, अर्थात् छह पूजा करो। एक सौ आठ बार णमोकार मंत्र का जाप करो, चारों संघ को चार प्रकार का दान देवो। तीनों काल सामायिक, व्रत, पूजन करो। घर के आरम्भ व विषय कषायों का उपवास के दिन और रात्रिभर आठ प्रहर तथा धारणा पारणा के दिन 4 प्रहर ऐसे सोलह प्रहरों तक त्याग करो। इस प्रकार छह वर्ष तक यह व्रत करो। पश्चात् उद्यापन करो अर्थात् जहाँ जिनमन्दिर न हो वहाँ छह जिनालय बनवाओ, छह जिनबिम्ब पधरावो, छह जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार करावो, छह शास्त्रों का प्रकाशन करो। छह-छह सब प्रकार के उपकरण मन्दिर में चढ़ाओ, छात्रों को भोजन करावो। आहार, औषध, उपकरण और आवास दान दो।

इस प्रकार दम्पत्ति ने व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक व्रत ग्रहण

करके विधिसहित पालन किया। कुछ दिन में अशुभ कर्म की निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग हो गया और आयु के अन्त में सन्यास मरण करके वे दम्पत्ति स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव-देवी हुए। बहुत काल तक सुख भोगते और नन्दीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा वन्दना करते काल व्यतीत करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुए हो और वह रत्नमालादेवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मिनी हुई है। तुम दोनों का पूर्वभवों का सम्बन्ध होने से प्रेम विशेष हुआ है। यह वार्ता सुनकर राजा को भवभोगों से वैराग्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर दीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया और तप के प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्ध पद को प्राप्त हुए। रानी पद्मिनी ने भी दीक्षा ली, वह भी तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर मनुष्य भव लेकर मोक्षपद प्राप्त करेगा।

इस प्रकार ईश्वरचन्द्र सेठ और चन्दना ने इस चंदनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर-सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और जो नर-नारी यह व्रत पालेंगे वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

चन्दनषष्ठी व्रत थकी, ईश्वरचन्द्र सुजान।
अरु तिस नारी चन्दना, पाया सौख्य महान।।

व्रतारम्भ तिथि- भाद्रपद कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि- 6 वर्ष
व्रत की विधि- व्रत के दिन उपवास करें
व्रत की पूजा- श्रीचन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जाप मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
उद्यापन का विधान- चमत्कारक **श्री चन्द्रप्रभु विधान**।
व्रत का फल- अशुद्धि से हुए अविनय की निवृत्ति हेतु।

(व्रत वैभव भाग 1-2 से)

नोटबुक यह सोम ग्रहारिष्ट निवारक विधान है। सोम ग्रह से पीड़ित जन यह विधान हर सोमवार को अवश्य करें एवं चालीसा पढ़ें तथा प्रतिदिन उपरोक्त जाप करें।

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भवा ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालिस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।

है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम बह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमूँ सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (कायोत्सर्ग कुरु...)

चन्द्रप्रभु स्तवन

चन्द्रप्रभः प्रभाधीशं, चन्द्रशेखर चन्दनम्।
चन्द्र लक्ष्म्यांकं चन्द्रांकं, चन्द्रबीजं नमोस्तु ते।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभः, श्रीं ह्रीं कुरु-कुरु स्वाहा।
इष्टसिद्धि महाऋद्धि, तुष्टिं पुष्टिं कुरु मम्।।

द्वादश सहस्र जपतो मंत्रः, वांछितार्थ फलप्रदः।
महंतं त्रिसंध्यं जपतः, सर्वार्ति व्याधि नाशनम्।।

महासुरेन्द्र श्री सहितः, श्री पाण्डव नृपस्तुतः।
श्री चन्द्रप्रभः तीर्थेशं, श्रियं चन्द्रो ज्वालां कुरु।।

श्री चन्द्रप्रभ विधेयं, स्मृतामेय फलप्रदाः।
भवाब्धि व्याधि विध्वंस, दायिनीमेव रक्षदा।।

पवित्रं परमं ध्येयं, परमानंद दायकम्।
भुक्तिमुक्ति प्रदातारं, पठतां मंगल प्रदम्।।

ऋद्धिसिद्धि-महाबुद्धि, धृतिकीर्तिसुकांतिदम्।
मृत्युं जयं शिवात्मानं, जगदानंदनं, जिनम्।।

सर्वकल्याण पूर्णेयं, जरामृत्युविवर्जितं।
अणिमार्द्धि महासिद्धि, र्लक्षजाप्येन चाप्नुयात्।।

हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः।
पातु नः परमानंदः, तत्क्षणं संस्तुति जिनः।।

तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रम्, सर्वमांगल्य सिद्धिदम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम्।।

(इति चन्द्रप्रभु स्तोत्रम्) पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मंगलाचरण-स्तवन

हम चन्द्रप्रभ के श्री चरणों में, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो चन्द्र समान समुज्ज्वल हैं, हम उनके गुण को गाते हैं।।
जो परम पूज्य हैं जगत श्रेष्ठ, उनके चरणों सिर नाते हैं।
हम 'विशद' ज्ञान के धारी जिनके, चरणों शीश झुकाते ह । ।

प्रभु दिनकर हैं करुणाकर हैं, ये ही जन-जन के त्राता हैं।
ये तीन लोक में पूज्य रहे, ये तीन काल के ज्ञाता हैं।।
प्रभु के चरणों की भक्ति से, सब रोग-शमन हो जाते हैं।
इनके चरणों में लीन रहें तो, कर्म सभी खो जाते हैं।।

गुणगान आपका करूँ विशद, मुझको प्रभु ऐसी शक्ति दो।
मैं रहूँ भक्ति में सराबोर, हमको प्रभु ऐसी भक्ति दो।।
मैं पतित रहा तुम पावन हो, मैं पावन होने को आया।
जिस पद को तुमने पाया है, मैं उस पद को पाने आया।।

हे दीनबन्धु ! हे कृपासिन्धु ! बस इतना सा उपकार करो।
मुझ भूले भटके राही को, सद्राह दिखा उद्धार करो।।
हे दयासिन्धु ! तुम दया करो, विनती मेरी स्वीकार करो।
मेरे जीवन की नौका को, भवसागर से प्रभु पार करो।।

तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, जग जन के सिद्धी दाता हो।
तुम भूमण्डल के चिरज्योति, शुभ विधि के आप विधाता ह । । ।
हे प्रभु ! आपके द्वारे पर, ये भक्त खड़ा अरदास लिए।

मम् बिगड़ी नाथ बना दीजे, ये भक्त खड़ा है आश लिए।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री 1008 चन्द्रप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटका फिरा, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आया, मैं चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतु, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।

मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत्
न म न । ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दु:ख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों में लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएं मिटी न, व्यंजन अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि नाश हेतु, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भ्रमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योति उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात हेतु, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतु, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत्
न म न । ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्च मुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं

निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल सिद्धशिला पर किया
बिहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – लेकर प्रासुक नीर, जल की धारा दे रहे।
होय नाश भव पीर, आये हम तव चरण में।। *शान्तये शांतिधारा*
सुरभित पुष्प महान, चन्द्र प्रभु के चरण में।
पाने पद निर्वाण, चढ़ा रहे हैं भाव से।। *दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हूँ नत भाल।
गुणमणि माला हेतु मैं, कहता हूँ जयमाल।।

ऋषि मुनि यति सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादि से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।

तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित्त चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करूणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रथम वलयः

दोहा– पूजन कर करते यहाँ, अर्घ्यों का प्रारम्भ।
अनन्त चतुष्टय के सुगुण, करते हैं आरम्भ।।

(अथ प्रथम वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)
(पहले वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के
द ा त ा । ।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

तीन लोक के सुगुण, द्रव्य पर्यायें जानी।
ज्ञानावरणी कर्म नाश, हुए केवल ज्ञानी।।
ज्ञानानन्त के धारी, चन्द्र प्रभु कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन भुवन के द्रव्य सभी, जिनको दर्शायें।
कर्म दर्शनावरण नाश कर, जो हर्षाये।।
केवल दर्शन स्वयं आप, चन्द्र प्रभु पाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म को नाश, सुख शाश्वत उपजाया।
नश्वर सुख को त्याग, विशद सुख जिनवर पाया।।
सुख अनन्त के धारी, चन्द्र प्रभु कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय है कर्म जीव का, बहु दुःख दाता।
कर्म नाश से वीर्य अनन्त, प्रकट हो जाता।।
वीर्य अनन्त के धारी, चन्द्र प्रभु कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छन्द)

हे तीन लोक के ज्ञाता जिन !, हे तीन काल के सद्दृष्टा !
हे सौख्य अनन्त के धारी जिन !, हे वीर बली ! हे उपदेष्टा !
हे कर्मघातिया नाशक जिन !, हे अनन्त चतुष्टय के धारी !
हम शीश झुकाते चरणों में, हे प्रभु ! जन-जन के उपकारी।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांति धारा करोमि (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ द्वितिय वलयः

दोहा- प्रातिहार्य पाए सु जिन, अनुपम अष्ट प्रकार।
अर्घ्य चढ़ाते भावसों, आठों अंग सम्हार।।

(अथ द्वितीय वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) (दूसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(रोला छन्द)

प्रातिहार्य है प्रथम कल्पतरू, शोक निवारी।
रत्नों से सुरभित फल पत्ते, पावन मनहारी।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि देवों के द्वारा, हुई मनोहर।
गगन मध्य में झरता हो, जैसे शुभ निर्झर।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि है श्री जिनेन्द्र की, ओमकार मय।
सब भाषा मय परिणत होकर, करे मोह क्षय।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तिभाव से सुरगण चौसठ, चँवर ढुराते।
प्रभु चरणों में तीन योग से, शीश झुकाते।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ के ऊपर शोभित होता, है कमलासन।
नाना रत्नों से मण्डित, ऊपर सिंहासन।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की आभा से शोभित, होता भूमण्डल।
सप्त भवों का दिग्दर्शक, पावन भामण्डल।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं भामंडल सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभि सर्व लोक में, करती है मंगल।
प्रभु के दर्शन से हो जाते, सब दूर अमंगल।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की छत्रत्रय, प्रभुता दर्शाते।
उभय लोक की श्री जिनवर, भगवत्ता पाते।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

तरु अशोक सुर पुष्पवृष्टि अरु, दिव्य देशना मंगलमय।

चौसठ चंवर शुभम् सिंहासन, भामण्डल है आभामय।।
गगन मध्य सुर दुन्दुभि बाजे, छत्रत्रय शोभित अविराम।
अष्ट प्रातिहार्यों के धारी, चन्द्रप्रभु के चरण प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाप्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ तृतिय वलयः

दोहा- सोलह कारण भावना, तीर्थंकर पद देय।
तृतीय वलय में भाव से, पुष्पाञ्जलि करेय।।

(अथ तृतीय वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) (अब तीसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टि सम्यक् नहीं बने।

दरश विशुद्धि हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवे।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह सुसंवेग भाव पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।

अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 5 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित संवेगभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ति को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ति को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धि हेतु, सुतप शक्तिशः वह पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 7 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्तपभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधि सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोई बाधा आवे।
दूर करे अनुराग भाव से, वैयावृत्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।

अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 9 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत् पद पावें।
दोषरहित उनकी भक्ति शुभ, अर्हत् भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार का पालन करते, दीक्षा देते शिवदायी।
उनकी भक्ति करना भाई, आचार्य भक्ति कहलाई।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुतधारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ति करना, बहुश्रुत भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 1 2 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्त्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ति ही, प्रवचन भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।

अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 1 3 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल
र ह ` । ।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव
र ह ` । । 1 4 । ।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह-तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनवात्सल्यभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनके गुण को गाते हैं।।

तीर्थंकर पदवी के हेतु, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ चतुर्थ वलयः

सोरठा- चन्द्रप्रभु चरणार, बत्तिस देव पूजा करें।
चतुःवलय मनहार, मिलकर पुष्पाञ्जलि करें।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) (अब चौथे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भवन वासियों के भेदों में, पहला होता असुर कुमार।
पंक भाग पहली पृथ्वी से, आता है जो सपरिवार।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री असुरकुमार इन्द्रपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय इन्द्र भवन वासी का, कहलाता है नागकुमार।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी के, भवन से आता सपरिवार।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-
ि व भ ा ` र ।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों
अ ा ` र । । 2 । ।

ॐ ह्रीं श्री नागेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय इन्द्र भवन वासी का, विद्युतेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा इन्द्र भवन वासी का, सुपर्णेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुपर्णेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम इन्द्र भवन वासी का, अग्नि इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।

चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसवाँ इन्द्र भवनवासी का, दिक्सुरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।10।।

ॐ ह्रीं श्री दिक्सुरेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र व्यन्तर देवों का, किन्नरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।11।।

ॐ ह्रीं श्री किन्नरेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय व्यन्तर देव का स्वामी, किंपुरुषेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।12।।

ॐ ह्रीं श्री किंपुरुषेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय व्यन्तर देव का स्वामी, महोरगेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।13।।

ॐ ह्रीं श्री महोरगेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निइन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम् इन्द्र भवन वासी का, मारुतेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मारुतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम इन्द्र भवन वासी का, स्तनितेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।7।।

ॐ ह्रीं श्री स्तनितेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम इन्द्र भवन वासी का, सागरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उदधि कुमारेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौवा इन्द्र भवन वासी का, दीप इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ति के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दीपेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी

चौथा व्यन्तर देव का स्वामी, गन्धर्व इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है ।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।14।।

ॐ ह्रीं श्री गन्धर्व इन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम व्यन्तर देव का स्वामी, यक्ष इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।15।।

ॐ ह्रीं श्री यक्षेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम व्यन्तर देव का स्वामी, राक्षसेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में पंक भाग से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।16।।

ॐ ह्रीं श्री राक्षसेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम व्यन्तर देव का स्वामी, भूत इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।17।।

ॐ ह्रीं श्री भूतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम व्यन्तर देव का स्वामी, पिशाचेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।

चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।18।।

ॐ ह्रीं श्री पिशाचेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ सौ अस्सी योजन नभ में, ज्योतिष्देवों का स्वामी।
निज परिवार सहित आता है, चन्द्र देव जिन पथगामी।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।19।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष देवों का स्वामी रवि, प्रति इन्द्र कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, धराधाम पर आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।20।।

ॐ ह्रीं श्री रविप्रतीन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र स्वर्गों से चलकर, ऐरावत पर आता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, श्रीफल चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सौधर्मेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारूढ़ ईशान इन्द्र शुभ, पूंगी फल ले आता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।

अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।22।।

ॐ ह्रीं श्री ईशानेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, इन्द्र जो आए सनत कुमार।
आम्रफलों के गुच्छे लेकर, पूजा करता सह परिवार।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सानतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारूढ़ सुभूषण मण्डित, केले लेकर आता है।
माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिनवर के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।24।।

ॐ ह्रीं श्री माहेन्द्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मइन्द्र भी हंस पे चढ़कर, पुष्प केतकी लाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।25।।

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र भक्ति से मण्डित, दिव्य फलों को लाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से,प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।26।।

ॐ ह्रीं श्री लान्तवेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक

श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती लाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।27।।

ॐ ह्रीं श्री शुक्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोयल वाहन के विमान पर, नीलकमल ले आता है।
शतारेन्द्र परिवार सहित शुभ, जिनवर चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।28।।

ॐ ह्रीं श्री शतारेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत इन्द्र गरुड़ पर चढ़कर, पनस फलों को लाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।29।।

ॐ ह्रीं श्री आनतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारूढ़ सुसज्जित, तुम्बरू फल जो लाता है।
प्राणतेन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजा करने आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।30।।

ॐ ह्रीं श्री प्राणतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद विमान पर आरणेन्द्र भी, गन्ने लेकर आता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।31।।

ॐ ह्रीं श्री आरणेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर ले आता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, चौसठ चँवर ढुराता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।32।।

ॐ ह्रीं श्री अच्युतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

श्री चन्द्रप्रभु की अर्चना को, साज सुन्दर सज रहे।
शुभ सप्तस्वर में सप्त मंगल, वाद्य सुन्दर बज रहे।।
सुरलोक से सुर इन्द्र सारे, आ गये जिनवर चरण।
जो भक्ति में तल्लीन होकर, कर रहे शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री द्वात्रिंशत इन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ पंचम वलयः

सोरठा- चौतिस अतिशय धर्म, समवशरण की भूमियाँ।
करूँ समर्पित अर्घ्य, पञ्चम वलय में भाव से।।

(अथ पंचम वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) (अब पाँचवें वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।

तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्म के अतिशय

(ताटंक छन्द)

प्रभु का शरीर अतिशय सुन्दर, होता अनुपम विस्मयकारी।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, शुभ पुण्य की है यह बलिहारी।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुन्दरतनसहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जन्म के अतिशय में, इक यह भी अतिशय पाते हैं।
प्रभुवर के तन की खुशबू से, लोकत्रय सुरभित हो जाते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तनसहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य उदय से पूरब के, कई ऐसे अतिशय हो जाते।

न स्वेद रहे तन में किंचित्, कई इन्द्र चरण आश्रय पाते।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस अतिशय में यह भी अतिशय, मल-मूत्र रहित तन पाते हैं।
आहार ग्रहण करते फिर भी, जिनवर निहार नहिं जाते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय जिनवर की वाणी, मन को संतोष दिलाती है।
करती प्रसन्न सारे जग को, जन-जन का मन हर्षाती है।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर सुर के इन्द्र सभी जिनकी, शक्ति के आगे हारे हैं।
अद्भुत अतुल्य बल के स्वामी, जग में जिनदेव हमारे हैं।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रग-रग में जिनके करुणा अरु, वात्सल्य झलकता रहता है।
है श्वेत रुधिर जिनका पावन, जो सारे तन में बहता है।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।

हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण एक हजार आठ, श्री जिन के तन में होते हैं।
ये मंगलमय सर्वोत्तम हैं, भव्यों की जड़ता खोते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभलक्षण सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकार मनोहर समचतुस्त्र, सुन्दर सुडौल तन पाते हैं।
परमाणु जितने जग में शुभ, मानो सब मिलकर आते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं समचतुष्कसंस्थान सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वज्र वृषभनाराच संहनन, अतिशय शक्तिशाली है।
जिनवर हैं जग में सर्वश्रेष्ठ, महिमा कुछ अजब निराली है।।
श्री चन्द्र प्रभु के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

शुभ केवल ज्ञान प्रकट होते, अतिशय सुभिक्ष हो जाता है।
सौ योजन सर्वदिशाओं में, अपनी सुवास बिखराता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते
ह ँ । । 1 1 । ।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञान उदित होता, तब गगन गमन हो जाता है।
सुर पाँच हजार धनुष ऊपर, शुभ कमल रचाने आता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का अतिशय महिमाशाली, इक मुख के चार दिखाते हैं।
बस उत्तर पूर्व सुमुख प्रभु का, हम समवशरण में पाते हैं।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बैर विरोध रहा जग में, प्रभु दर्शन से नश जाता है।
आपस में प्रीति झलकती है, करुणा का स्रोत उभरता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अदयाऽभाव सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म घातिया नश जाते, कैवल्य प्रगट हो जाता है।
तब चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अतिशय रहा परम पावन, प्रभु कवलाहार नहीं करते।
नो कर्म वर्गणाओं द्वारा, प्रभु चेतन में ही आचरते।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मंत्र तंत्र में नीति निपुण, सब विद्याओं के ईश्वर हैं।
न जग में रहा कोई बाकी, प्रभु पृथ्वी पति महीश्वर हैं।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह केवलज्ञान की महिमा है, प्रभु हो जाते अन्तर्यामी।
नख केश नहीं बढ़ते किंचित्, तन होता है जग में नामी।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्व सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की है सौम्य शांत दृष्टि, नासा पर सदा लगी रहती।
प्रभु वीतरागता धारी हैं, अन्तर की बात मुखर कहती।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का तन परमौदारिक है, पुद्गल निमित्त बन पाता है।
छाया से रहित रहा फिर भी, जो सबके मन को भाता है।

सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय

शुभ दिव्य देशना जिनवर की, सर्वार्ध मागधी भाषा में।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़े, जन-जन में मैत्री भाव रहे।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो सर्व दिशाएँ हों निर्मल।
तब देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वदिग्निर्मलत्व देवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का समवशरण लगते, आकाश श्रेष्ठ निर्मल होवे।
यह चमत्कार है देवों का, सारे जो दोषों को खोवे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।

हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।24।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण प्रभु का आते, खिलते हैं एक साथ फल-फूल।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर भी झुक जाते अनुकूल।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादितरुपरिणाम देवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु के चरण जहाँ पड़ जाते, भू कंचनवत हो जाती हैं।
वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत् होती जाती है।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।26।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते सुर, स्वर्ण कमल रचते पावन।
वह सात-सात आगे पीछे, इक मध्य पञ्चदश मनभावन।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।27।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, भक्ति से जय-जयकार करें।
आओ-आओ सब भक्ति करें, चारों ही ओर पुकार करें।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।28।।

ॐ ह्रीं श्री एतैतैतिचतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त

सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलती है मन्द सुगन्ध पवन, सब व्याधि विषम विनाश करे।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।29।।

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरण मनुगतवायुत्व देवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वृष्टि करें गंधोदक की, मन में अति मंगल मोद भरें।
ये चमत्कार शुभ भक्ति का, वह भक्ति मेघकुमार करें।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।30।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन कुमार देव मिलकर शुभ, अतिशय खूब दिखाते हैं।
धूलि कंटक से रहित भूमि पर, वह प्रभु का गमन कराते हैं।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।31।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादि देवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द मिले जन-जन को, मन आनन्दित हो जाते हैं।
रोम-रोम पुलकित हो जाए, जब प्रभु का दर्शन पाते हैं।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र को सिर पर रखकर, चलते यक्ष आगे-आगे।

यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलश ताल दर्पण प्रतीक शुभ, छत्र चँवर ध्वज अरु भृंगार।
मंगल द्रव्य आठ देवों के, होते हैं जग में सुखकार।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य

(गीतिका छन्द)

क्रोध की अग्नि हमेशा, मम् हृदय जलती रही।
भूल से मम् आत्मा को, नित्य ही छलती रही।।
अब क्षमा उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।35।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान को निज मानकर, हम गर्व से फूले रहे।
अहं के ही वहं में निज, लक्ष्य को भूले रहे।।
अब धर्म मार्दव प्राप्ति हेतु, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।36।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छल कपट हमको जहाँ में, कई भवों से छल रहा।

चक्र माया का अनादि, काल से यह चल रहा।।
अब धर्म आर्जव प्राप्ति हेतु, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।37।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ के कारण हमेशा, क्षोभ अन्दर में रहा।
भिन्न है जो द्रव्य सारे, उनको अपना ही कहा।।
अब शौच उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।38।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ के कई घूंट हमने, भूल से अब तक पिए।
पाप की सरिता में बहकर, लोक में अब तक जिए।।
अब सत्य उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।39।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियों के फेर में, मन भी मचलता ही रहा।
त्रस जीव स्थावर सभी को, मैं कुचलता ही रहा।।
अब धर्म संयम प्राप्ति हेतु, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।40।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूल से अज्ञानता वश, कुतप को तपते रहे।
छोड़कर द्वादश तपों को, कुमति को जपते रहे।।
अब सुतप उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।

प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।41।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग के ही नाग ने, हमको सदा घायल किया।
दुष्कृत्य करने के लिए, उसने हमें कायल किया।।
अब त्याग उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।42।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह परिग्रह का लगा, जो कर्म का ही मूल है।
उसमें सदा भटके रहे, यह आत्मा की भूल है।।
अब आकिंचन धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।43।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिया है तीनों की घातक, मन वचन अरु देह की।
लोक में पेड़ी कही है, राग अरु स्नेह की।।
अब ब्रह्मचर्य शुभ धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।44।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तम्भ सम्बन्धी अर्घ्य

जब केवलज्ञान हुआ प्रभु को, तब समवशरण शुभ रचा गया।
सर्वार्थ नगर में हुआ चमन, इतिहास वहाँ पर बना नया।।
हम पूर्व दिशा में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभु, बस यही भावना भाते हैं।।45।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन

विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु की चन्द्र किरण से, महका धरती का कण-कण।
सुर नर किन्नर सब हर्षित थे, हर्षित थे सारे साधुगण।।
हम दक्षिण दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभु, बस यही भावना भाते हैं।।46।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महासेन के नन्दन का, करता सारा जग अभिनन्दन।
उनके चरणों की रज पावन, बन गई विशद शीतल चंदन।।
हम पश्चिम दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभु, बस यही भावना भाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण का मानस्तम्भ, मानी का मान गलाता है।
जो मिथ्यातम का नाशक है, सबको सम्यक्त्व दिलाता है।।
हम उत्तर दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभु, बस यही भावना भाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समोशरण के अर्घ्य

प्रभु के दर्शन से रोग शोक, दारिद्र कलह कट जाते हैं।
प्रासाद चैत्य भूमि में जाकर, भक्त विशद सुख पाते हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।49।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थित चैत्यप्रसादभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूमि खातिका मनमोहक, द्वितीय भूमि कहलाती है।

जहाँ फूल रहे हैं पुष्प पुञ्ज, लखकर जनता हरषाती है।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।50।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित खातिकाभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है लता भूमि तृतीय पावन, शुभ पुष्प लताओं से सुरभित।
प्रभु का दर्शन कर लेने से, हो जाता है तन-मन हर्षित।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।51।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित लतावनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन उपवन भूमि अनुपम है, हैं वृक्ष कई अतिशयकारी।
जिनबिम्ब जिनालय से मण्डित, शोभा है अति विस्मयकारी।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।52।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित उपवनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज भूमि सर्व दिशाओं में, दश चिह्नों से शोभा पाती।
दश विधि से आठ एक सौ ध्वज, लघु महा प्रति दिश लहराती।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।53।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित ध्वजभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कल्पवृक्ष भूमि छठवी, जो सुर वृक्षों से मण्डित है।
पूर्वादि सर्व दिशाओं में, सिद्धों के बिम्ब अखण्डित हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।

हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।54।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित कल्पवृक्षभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम भूमि है भवन भूमि, भवनों में देव विचरते हैं।
सब देव-देवियाँ भवनों से, आकर के क्रीड़ा करते हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।55।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित भवनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु का समवशरण, विस्तृत है अर्ध वसु योजन।
बारह कोठों से भव्य जीव, सुर-नर पशु रहते हैं मुनिगण।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।56।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित मण्डपभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों से मंडित प्रथम पीठ, शुभ समवशरण में है पावन।
सुर धर्म चक्र ले खड़े हुए, आह्लादित करते हैं तन-मन।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।57।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित प्रथमपीठोपरि धर्मचक्राय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता युक्त पीठ द्वितिय, आठों दिश में ध्वज लहराएँ।
नव निधि द्रव्य मंगल आठों, घट धूप शुभम् शोभा पाएँ।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।58।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित द्वितीयपीठोपरि महाध्वजाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी

चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय वंदित शुभ गंध कुटी, है तृतीय पीठ पर कमलासन।
चऊ अंगुल अधर श्री जिनवर, उनका चलता जग में शासन।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।59।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित तृतीयपीठोपरि गंधकुट्यै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर हैं तीन अधिक नब्बे, श्री चन्द्रप्रभु के समवशरण।
वैदर्भ प्रथम गणधर स्वामी, रहते हैं प्रभु के चरण-शरण।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।60।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित वैदर्भ आदित्रिनवतिगणधरेभ्यो सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश सहस्र केवलज्ञानी, शुभ समवशरण में राज रहे।
जो कर्म घातिया नाश किये, अब पाने मोक्ष स्वराज रहे।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।61।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित अष्टादशसहस्र केवलज्ञानी मुनिन्द्राय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो लाख पचास हजार मुनि, श्री चन्द्रप्रभु के साथ रहे।
प्रभु समवशरण में उन सबके, चरणों में मेरा माथ रहे।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।62।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित द्विलक्षपंचाशत सहस्र सर्वमुनिश्वरेभ्योः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ॐकारमय दिव्य ध्वनि, सब भाषा में समझाती है।

दस आठ महाभाषा समेत, लघु सप्त शतक में आती है।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित जिनमुखोद्भव ॐकारयुक्त सर्वभाषामय दिव्यध्वनिभ्योः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता, जिन श्रुत केवली कहलाए।
जो समवशरण में चन्द्रप्रभु के, भाव सहित शुभ गुण गाए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित श्रुतकेवलीसमूह सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तीन काल के ज्ञाता हैं, अरु तीन लोक में पूज्य हुए।
हम तीन योग से करें वन्दना, त्रिय भक्ति से चरण छुए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त्ये शांतिधारा करोमि (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप :- (1) ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं अजित मनोवेगा यक्ष-यक्षिणी सहिताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रायः नमः (स्वाहा) (2) ॐ ह्रीं श्रीं अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्हम् नमः। (स्वाहा)

समुच्चय जयमाला

दोहा- तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, चन्द्रप्रभु भगवान।
विशद भाव से कर रहे, जिनवर का गुणगान।।

चन्द्रप्रभु के श्री चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।
उनके चरण कमल की धूली, पावन है शीतल-चंदन।।
चन्द्रपुरी उत्तरप्रदेश में, अनायास खुशियाँ छाई।

सूखे ताल सरोवर नदियाँ, शीतल जल से भर आई।।1।।
देवों ने कई रत्न मनोहर, आसमान से बरसाये।
सुन्दरता लखकर नर-नारी, मन ही मन में हरषाये।।
छह माह पूर्व से देवों ने, नगरी को खूब सजाया था।
धरती को मानो इन्द्रों ने, स्वर्गों का रूप बनाया था।।2।।
तब वैजयन्त से च्युत होकर, इस धरती पर अवतार लिया।
लक्ष्मीमति माता की कुक्षि, को श्री प्रभुवर ने धन्य किया।।
छप्पन कुमारियों ने मिलकर, माता के गर्भ का शोध किया।
नौ मास गर्भ में रहकर के, माता के मन को मोद किया।।3।।
तब पौष कृष्ण ग्यारस के दिन, को गूँज उठी शहनाई थी।
श्री महासेन के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
जब चन्द्रप्रभु का जन्म हुआ, सौधर्म इन्द्र ऐरावत लाया।
तब शची ने शिशु को लिया हाथ, मायामय बालक पधराया।।4।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
अरु शचि ने चंदन चर्चित कर, बालक का शुभ श्रृंगार किया।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक को, माता के गृह में सौंप दिया।
तब इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रों ने, मिलकर के उत्सव महत् किया।।5।।
प्रभु मित्रों के संग क्रीड़ा करते, तब हर्षित हुए मित्र सारे।
जब आठ वर्ष की उम्र हुई, तब स्वयं आप अणुव्रत धारे।।
दस लाख पूर्व की आयु पा जिन, मन वांछित सुख भोग किए।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, इस जग से प्रभु वैराग्य लिए।।6।।
लौकान्तिक देवों ने आकर, श्री जिनवर को सम्बोध दिया।
शिविका लेकर आये सुरगण, उस पर चढ़कर वन गमन किया।।
शुभ पौष कृष्ण ग्यारस तिथि को, प्रभु ने गृहवास को छोड़ दिया।
तब स्वजन और परिजन बन्धु, उन सबसे नाता तोड़ दिया।।7।।

संग एक सहस्र राजाओं के प्रभु, स्वयं आप संन्यास लिया।
तव आप गये सर्वार्थ सुवन, वहाँ तेला का उपवास किया।।
फिर पञ्च मुष्टि से केश लौंच, कर पञ्च महाव्रत भी धारे।
तब सुर नर इन्द्रों ने बोले, श्री चन्द्रप्रभु के जयकारे।।8।।
नृप शील शिरोमणि चन्द्रदत्त, ने पय का शुभ आहार दिया।
तब देवों ने खुश होकर के, उस नगर में पञ्चाश्चर्य किया।।
फिर घोर सुतप कर तीन माह, में कर्म घातिया नाश किए।
तब फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किए।।9।।
फिर समवशरण की रचना कर, देवों ने उत्सव महत किये।
वसु प्रातिहार्य शुभ मंगल द्रव्य, अरु यक्ष खड़े थे चक्र लिये।।
है शोक निवारक तरु अशोक, अरु दुन्दुभि करती मधुर गान।
शुभ सिंहासन है कमलयुक्त, अरु छत्र तीन अतिशय महान।।10।।
जहाँ पुष्प वृष्टि होती पावन, अरु दिव्य ध्वनि खिरती मंगल।
शुभ चँवर ढुराते देव शुभम्, अरु शोभित होता भामण्डल।।
इत्यादि विभूति युक्त प्रभु, ने भवि जीवों को तारा है।
शुभ दर्शन ज्ञान चरण देकर, इस भव से पार उतारा है।।11।।
फिर योग निरोध किया प्रभु ने, अरु कर्म अघाति नाश किए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु सिद्धशिला पर वास किए।।
हम सिद्ध शिला के अधिनायक, का करते हैं शुभ अभिनन्दन।
अब 'विशद' भाव से करते हैं, हम चरणों में शत्-शत् वन्दन।।12।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिनवर पद ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, शिव जाऊँ।
मैं कर्म नशाऊँ, ज्ञान बढ़ाऊँ, रत्नत्रय निधि को पाऊँ।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चन्द्रप्रभु के चरण में, भक्ति करूँ कर जोर।

हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

शान्तये शान्तिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू -छन्द) तर्ज- आल्हा

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी रही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देख इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।

पौष कृष्णा एकादशी को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।
साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को शुभ, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौर्वाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोला, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के पाए सबने दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।

टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर-नगर के मंदिर में, प्रभु शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरती वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

***

श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ (जय) चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।। ॐ जय.....
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।। ॐ जय.....
आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व-पर उपकारी।। ॐ जय.....
पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।। ॐ जय.....
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।। ॐ जय.....
तुमको ध्याने वाला, सुख-शांति पावे।
विशद आरती करके मन में हर्षावे।। ॐ जय.....
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।। ॐ जय.....
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।

New Proof
7-5-2010

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।

मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान